बी. ए. एल. एल.बी. प्रथम सेमेस्टर

समाजशास्त्र

Scanned by TapScanner

Syllabus

1) **The nature of Sociology:** The meaning of sociology, the sociological perspective, sociology and social sciences, the scientific and humanistic orientations to Sociological study.

2) **Basic concept:** Society, community, Institution, Association, Group Social Structure, Status and Role.

3) **Institutions:** Family, Religion and Education

4) **The Individual and Society:** Society, Culture and Socialization, Relation between individual and society.

5) **Social Stratification:** Meeting Forms and Treaties.

6) **Social Change:** Meaning and type, Evolution and Revolution, Progress and Development-Factors of Social change

Scanned by TapScanner

समाजशास्त्र की परिभाषा,विषय-क्षेत्र

Scanned by TapScanner

एक व्यवस्थित विज्ञान के रूप में समाजशास्त्र की स्थापना 19वीं सदी में यूरोप में हुई। समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है। जिसके द्वारा सामाजिक जीवन का अध्ययन किया जाता है। एक व्यवस्थित विज्ञान के रूप में इसकी स्थापना का श्रेय फ्रांस के दार्शनिक अगस्त कॉम्ट को है। इन्होनें की सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिये सर्वप्रथम वैज्ञानिक विधि का प्रयोग किया तथा अवलोकन, परीक्षण और वर्गीकरण को सामाजिक घटनाओं के अध्ययन की पद्वति का अंग बनाया। काम्ट प्रथम विद्वान थे जिन्होनें समाज का अध्ययन करने वाले विज्ञान को Social Physics का नाम दिया।

कालान्तर में सन् 1838 में कॉम्ट महोदय ने इसका नाम Sociology रखा यही कारण है कि इन्हें समाजशास्त्र का जनक माना जाता है। शाब्दिक रूप से Sociology शब्द दो विभिन्न स्थानों के शब्दों से मिलकर बना है। पहला शब्द Socius है जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है तथा दूसरा शब्द Logus है जो ग्रीक भाषा से लिया गया है। Socius का अर्थ समाज तथा Logus का अर्थ शास्त्र है। इस प्रकार Sociology का अर्थ समाज के विज्ञान से है।

Definitions of Sociology- विभिन्न समाजशास्त्रियों ने समाजशास्त्र को भिन्न–भिन्न आधारों पर परिभाषित किया है–

According to L.F. ward – Sociology is scientific study of society.

समाज शास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है।

मैकाइवर एवं पेज – Sociology is about social relationship the network of relationship we call society – society

Scanned by TapScanner

समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के विषय में है। सम्बन्धों के इसी जाल को हम समाज कहते हैं।

गिडिंग्स Giddings – समाजशास्त्र समग्र रूप में समाज का व्यवस्थित वर्णन एवं व्याख्या है।

Sociology is a systematic description and explanation fo society viewed as a whole.

–Giddings.

Max Weber:- Sociology is a science which attemts the interpretatire understanding of soical action.

समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रियाओं का व्याख्यात्मक बोध कराने का प्रयास करता है।

Harry Johnson – sociology is the science fo social groups ---------- a social group is a system fo social interactions.

सामाजशास्त्र सामाजिक समहों का विज्ञान है।

Gillin & gillin :- Sociology in its broadest sense may be said to be the study of interactions arising from the associations of livings being.

-Cultural Sociology.

व्यक्तियों के एक दूसरे के सम्पर्क में आने के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अंतक्रियाओं के अध्ययन को ही समाजशास्त्र कहा जा सकता है।

Durkhiem (दुर्खीम) :– समाजशास्त्र सामूहिक प्रतिनिधानों का विज्ञान है।

Morris Ginsberg – समाजशास्त्र मानवीय अंतर्क्रियाओं तथा अर्तसम्बन्धों उनके कारणों एवं परिणामों का अध्ययन हैं।

George Simmel जार्ज सिमेल :– समाजशास्त्र मानवीय अंतर्क्रियाओं के स्वरूपों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।

Dr. R. K. Mukerjee- समाजशास्त्र सामाजिक मूल्यों से प्रभावित सामाजिक सम्बन्धों का वैज्ञानिक अध्ययन है।

Scanned by TapScanner

Arnold M. Rose – समाजशास्त्र मानव सम्बन्धों का विज्ञान है।

Piffrim Sorokin – सोरोकिन :– समाजशास्त्र सामाजिक सांस्कृतिक प्रघटनाओं के समान्य प्रकारों एवं अनेक अंतसम्बन्धों का सामान्य विज्ञान है।

Fairchild – समाजशास्त्र मानव समूहों के पारस्परिक सम्बन्धों से उत्पन्न होने वाले तथ्यों का वैज्ञानिक अध्ययन है।

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र सम्पूर्ण समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन करने वाला विज्ञान है। इसमें सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है।

समाजशास्त्र का विषय क्षेत्रः–समाजशास्त्र के विषय क्षेत्र के सम्बन्ध में विद्वानों के मतों को मुख्य रूप से दो भागों में बॉटा जा सकता है–

A. स्वरूपात्मक सम्प्रदाय (Formal School) इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक जर्मन समाजशास्त्री जार्ज सिमेल है। मैक्स वबेर, वीरकान्त, वॉनविज तथा टॉनीज इस सम्प्रदाय के प्रमुख समर्थक है। इस विचारधारा से सम्बन्धित विद्वानों के विचार इस प्रकार हैं–

(a) **जार्ज सिमेल के विचारः**–इनके अनुसार समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन है। सिमेल का कथन है कि समस्त भौतिक और अभौतिक वस्तुओं का अपना एक स्वरूप और एक अर्न्तवस्तु होती है जो एक दूसरे से भिन्न होते हैं। स्वरूप और अंर्तवस्तु का एक दूसरे पर कोई प्रभाव नही पडता है। जैसे–एक ही स्वरूप वाली बोतलों में से एक में पानी, दूसरी में दूध तथा तीसरी में शरबत भरा जा सकता है। पानी, दूध और शरबत का बोतलों के स्वरूप पर और इनके स्वरूप का बोतलों की अर्न्तवस्तु पर कोई प्रभाव नही पडेगा। बोतल की विशेष आकृति उसका स्वरूप है, और उसमें भरा हुआ पानी, दूध, तथा शरबत उसकी अर्न्तवस्तु है।

Scanned by TapScanner

इस प्रकार सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप और अर्न्तवस्तु में भी अन्तर पाया जाता है तथा ये भी एक दूसरे को प्रभावित नही करते है। अनुकरण, सहयोग, प्रतिस्पर्द्धा, प्रभुत्व, अधीनता, तथा श्रम विभाजन आदि सामाजिक सम्बन्धों के प्रमुख स्वरूप है। सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप जब विभिन्न अर्न्तवस्तुओं जैसे आर्थिक संघ, धार्मिक संघ, राजनितिक दल आदि में पाये जाते है तो इसका अध्ययन अन्य सामाजिक विज्ञानों में किया जाता है। अर्थात समाजशास्त्र को केवल सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन करना चाहिए न कि अर्न्तवस्तुओं का।

(ii) **मैक्सवेबर के विचार** :– मैक्सवेबर का मत है कि समाजशास्त्र में केवल सामाजिक क्रियाओं का ही अध्ययन किया जाना चाहिए। इनके अनुसार सामाजिक क्रिया वह क्रिया है जो दूसरे लोगों के व्यवहारों से प्रभावित होती है तथा अर्थपूर्ण होती है। जैसे यदि कोई जादूगर जादू का खेल दिखा रहा है तो यह सामाजिक क्रिया नही है क्योकि यह एक पक्षीय है। क्रिया सामाजिक तभी होती है जब वह अर्थपूर्ण हो तथा दूसरे के व्यवहारों से प्रभावित होने के साथ स्वंय भी उन्हें प्रभावित करती हो।

(iii) **वीरकान्त के विचारः**– इनका मत है कि समाज शास्त्र को एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में मानसिक सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन करना चाहिए जो व्यक्तियों को एक दूसरे से अथवा समूह से बॉधते हैं । जैसे समाजशास्त्र इस पर विचार नही करता कि पिता और पुत्र में तथा माता और पुत्री में क्या सम्बन्ध है वह तो यश, प्रेम, लज्जा, स्नेह, समपर्ण, घृणा, सहयोग तथा संघर्ष आदि भावनात्मक अथवा मानसिक पहलुओं का अध्ययन करता है। इन्ही के आधार पर विभिन्न सामाजिक सम्बन्ध बनते है और इन्हीं सामाजिक सम्बन्धों से समाज का निर्माण होता है।

Scanned by TapScanner

(iv) **वॉनविज के विचारः**– इनका मत है कि समाजशास्त्र एक विशिष्ट सामाजिक विज्ञान है जो मानवीय सम्बन्धों के स्वरूपों का अध्ययन है और यही उसका विशिष्ट क्षेत्र है।

आलोचनाः– समाजशास्त्र के स्वरूपात्मक सम्प्रदाय की निम्नलिखित आलोचनाएँ की गई है–

a) इस सम्प्रदाय के समर्थकों ने स्वरूप और अन्र्तवस्तु को एक दूसरे से अलग माना है लेकिन सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूप तथा अन्र्तवस्तु को एक दूसरे से अलग नही किया जा सकता है।

b) इस सम्प्रदाय के समर्थक समाजशास्त्र को एक स्वतंत्र एवं विशुद्ध विज्ञान बनाना चाहते है जो कि असम्भव है।

c) समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र को सामाजिक सम्बन्धों के कुछ विशिष्ट स्वरूपों तक सीमित मानना उचित नही है ऐसा करने पर सामाजिक जीवन के अनेक पक्ष इसमें नही आयेंगे।

d) इस सम्प्रदाय के समर्थकों ने समाजीकरण के स्वरूपों व सामाजिक सम्बन्धों के स्वरूपों में कोई अन्तर नही किया है जबकि दोनों में काफी अन्तर है।

2. **समन्वयात्मक सम्प्रदाय <u>(Synthetic School)</u>** :– इस सम्प्रदाय के समर्थकों में सोरोकिन, दुर्खीम, हॉबहाउस, तथा गिन्सबर्ग हैं। इस सम्प्रदाय के समर्थक समाजशास्त्र को एक सामान्य विज्ञान बनाने के पक्ष में है। इस सम्प्रदाय के समर्थकों के विचारों को निम्नलिखित तथ्यों के द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता हैः–

a) **<u>हॉब हाउस के विचार :–</u>** हॉबहाउस के अनुसार समाजशास्त्र को अन्य समस्त सामाजिक विज्ञानों के प्रमुख सिद्वान्तों एवं सार तत्वों के मध्य पाये जाने वाले सामान्य तत्वों का पता लगाना और उनका

AWADH LAW COLLEGE

Scanned by TapScanner

सामान्यीकरण करना है। समाजशास्त्र यह कार्य निम्नलिखित प्रकार से कर सकता है –

1. समस्त सामाजिक विज्ञानों की प्रमुख धाराणाओं के सामान्य स्वरूपों की जानकारी प्राप्त करके ।
2. समाज को स्थायी रखने तथा बदलने वाले कारकों को ज्ञात करके।
3. सामाजिक विकास की प्रकृति एवं दशाओं को पता लगा करके।

b) दुर्खीम के विचार :– इनके अनुसार एक सामान्य समाजशास्त्र का निर्माण सम्भव है जो विशेष क्षेत्रों के नियमों पर आधारित अधिक सामान्य नियमों से मिलकर बना हो। ये ही सामूहिक रूप से सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्होनें समाजशास्त्र में सर्वप्रथम उन सामाजिक तथ्यों के अध्ययन पर बल दिया जिनसे सामाजिक प्रतिनिधान का निर्माण होता है।

सामूहिक प्रतिनिधानों से दुर्खीम का तात्पर्य प्रत्येक समूह अथवा समाज में पाये जाने वाले विचारों, भावनाओं एवं धाराणाओं के एक कुलक से है जिन पर व्यक्ति अचेतन रूप से अपने विचारों, मनोवृत्तियों एवं व्यवहार के लिये निर्भर करता है। इन्हें समाज के अधिकतर लोग अपना लेते हैं। ये विचार भावनाएँ एवं धाराणएँ ही एक सामूहिक शक्ति का स्वरूप ग्रहण कर लेती है, इसे ही दुर्खीम ने सामूहिक प्रतिनिधान कहा है। ये सामूहिक रूप में सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं। समाजशास्त्र को इन्हीं सामूहिक प्रतिनिधानों का अध्ययन करना चाहिए, जिससे विभिन्न सामाजिक समस्याओं और परिस्थितियों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

C) **सोरोकिन के विचार** :– सोरोकिन ने सामान्य विज्ञान मानते हुये यह तर्क दिया है कि यदि सामाजिक घटनाओं को कुछ विशेष वर्गो में विभाजित करके प्रत्येक वर्ग का अध्ययन एक–एक विशेष सामाजिक विज्ञान द्वारा किया

Scanned by TapScanner

जाये तो निश्चय ही एक ऐसे भी विज्ञान की आवश्यकता को जाती है जो इन विशेष विज्ञानों के मध्य पाये जाने वाले सम्बन्धों का सामान्य अध्ययन कर सके। इनके अनुसार कोई भी सामाजिक विज्ञान सम्पूर्ण रूप से स्वत्रंत नही है। किसी न किसी आधारपर समस्त सामाजिक विज्ञान एक दूसरे पर निर्भर है। इस तथ्य को दृष्टिगत् करते हुये एक ऐसे सामान्य समाजशास्त्र को विकसित करना आवश्यक है जो विभिन्न सामाजिक विज्ञानों द्वारा प्रस्तुत निष्कर्षो में समन्वय स्थापित कर सकें। निम्नलिखित उदाहरण के द्वारा इसे स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है –

क्रम0 सं0	समाजिक विज्ञान	विषय वस्तु
1.	अर्थशास्त्र	a,b,c,d,e,f,
2.	राजनीतिशास्त्र	a,b,c,g,h,i,
3.	कानूनशास्त्र	a,b,c,j,k,l,
4.	धर्मशास्त्र	a,b,c,m,n,o
5.	मनोरंजन	a,b,c,p,q,r,

सोरोकिन ने स्पष्ट किया कि समस्त विशिष्ट विज्ञानों मे a,b, और c सामान्य तत्व हैं। जबकि कुछ तत्व ऐसे हैं जो सभी सामाजिक विज्ञानों में एक दूसरे से भिन्न हैं। समाजशास्त्र इन्हीं सामान्य तत्वों का अध्ययन करने के कारण एक सामान्य सामाजिक विज्ञान है।

समन्वयात्मक सम्प्रदाय की आलोचना :– इस सम्प्रदाय के विरूद्ध कुछ प्रमुख आरोप इस प्रकार हैं –

(i) यदि समाजशास्त्र में समस्त प्रकार के सामाजिक तथ्यों एवं प्रघटनाओं का अध्ययन किया जायेगा तो यह समस्त विज्ञानों की एक खिचड़ी मात्र या हरफनमौला विज्ञान बन जायेगा।

Scanned by TapScanner

(ii) यदि समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान होगा तो इसका अपना कोई स्वतंत्र क्षेत्र नहीं होगा। ऐसी दशा में इसे अन्य विज्ञानों पर आश्रित रहना पड़ेगा।

(iii) यदि समाज शास्त्र में समस्त प्रकार के सामाजिक तथ्यों तथा प्रघटनाओं का अध्ययन किया जाने लगा तो यह किसी भी तथ्य अथवा प्रघटना का पूर्णता के साथ अध्ययन नहीं कर पायेगा।

(iv) यदि समाजशास्त्र समस्त सामाजिक विज्ञानों का संकलन मात्र होगा तो इसकी अपनी कोई निश्चित पद्धति विकसित नहीं हो पायेगी।

AWADHI LAW COLLEGE

Scanned by TapScanner